सादर प्रकाशनार्थ

अक्षय चिकित्सालय में राजयोग मेडिटेशन कमरे का शुभारम्भ

कोरबा 2.03.2017–अक्षय चिकित्सालय में राजयोग मेडिटेशन कमरा के शुभारम्भ के अवसर पर ब्रह्माकुमारी रूकमणी बहन ने कहा कि तन के 80 प्रतिशत रोगों का कारण मन की चिन्तायें व मनोवृत्ति का एकाग्र न होना पाया गया है। ऐसा महसूस किया गया है कि रोगी को शरीर के इलाज के साथ–साथ मन की सांत्वना, सद्भावना व शुभकामनाओं की आवश्यकता होती है। मन की अवस्था का डारेक्ट संबंध शरीर पर पड़ता है। यह हास्पिटल नहीं लेकिन एक हास्टल का अनुभव करायेगा। मरीजों को ऐसा अनुभव होगा कि हम यहां इलाज नहीं बल्कि एक खेल व मनोरंजन के लिये आये हैं। ब्रह्माकुमारी बिन्दु बहन ने कहा कि डॉक्टर साहब को मैं बधाई देना चाहूंगी कि कोरबा में आपने इतना साहसिक कदम उठाया है। आपका यह संकल्प है कि स्टाफ का हर सदस्य कार्य स्थल पर जाने से पहले ईश्वर से शक्ति लेकर अपना कार्य प्रारम्भ करे। जहॉ रूहानी शक्तियां होती हैं, वहां वह मरीजों के लिये रूहानी इन्जेक्शन का कार्य करती हैं। यह हास्पिटल इस अंचल के लिये एक उदाहरण है, जो तन के स्वास्थ्य के साथ मन को भी सशक्त बनाने का कार्य करेगा। यह तन की राहत के साथ–साथ मरीज और उनके परिवार वालों को आत्मिक शांति भी प्रदान करेगा। डॉ. के.सी.देवनाथ एम.डी. हृदय रोग विशेषज्ञ ने कहा कि राजयोग से जुड़ने के बाद यह संकल्प आता था कि दवा तो हम मरीजों को देते हैं, लेकिन ईश्वर से यही प्रार्थना रहती है कि इसे शक्ति प्रदान करना व दुआ देना। तन और मन का आपस में गहरा संबंध है। मैं जब माउन्ट आबू गया तो मैंने यह पाया कि डॉ. सतीश गुप्ता हृदयरोग विशेषज्ञ ने बिना किसी आपरेशन से 700 मरीजों की कार्टिज ब्लाकेज खोलने का प्रयास किया और वे सफल भी हुए। यह था जीवन शैली और मेडिटेशन का प्रभाव । यह एक नया प्रयास है कि कैसे मेडिटेशन रोगों के इलाज करने में सहायक होगा। यह एक विज्ञान है कि मन की शक्ति से तन को स्वस्थ करना। अब मेरा यह लक्ष्य रहेगा कि मरीजों की सेवा करके दुआओं का भी बैंक बेलैंस भी बढ़ायें। भ्राता कमल कर्माकर रिटा. महाप्रबंधक बाल्को ने कहा कि यह एक रूहानी और जिस्मानी ईलाज का एक सुन्दर समन्वय है कि दवा डॉक्टर से लें और दुआ मेडिटशन रूम में जाकर ईश्वर से प्राप्त करें।

डॉक्टर साहब का कोरबा के लिये पहला प्रयास है जो दूसरे डॉक्टरों के लिये प्रेरणा श्रोत बनेगा। भ्राता शेखरराम ने कहा कि जब मरीज सभी प्रयासों से थक कर हार जाता है, तब कहते हैं कि अब ईश्वर का नाम लो व उसे याद करो। यह एक अच्छा प्रयास है कि वह पहले से ही मन को ईश्वर में लगा कर सकारात्मक सोच का अनुभव करेगा।

मानवता की सेवा में, ब्रह्माकुमारी रूकमणी